सहारा समय

13 NOV 2004

इस बाजार में बापू कुटी

रजनी बख्शी

बीसवीं सदी के आखिरी दशकों में यह मान्यता बनी कि अब दुनिया मुक्त बाजार या फ्री मार्केट के आधार पर चलेगी और समृद्धि फैलेगी। इस विचारधारा का केंद्रबिंदु व प्रतीक है वॉल स्ट्रीट, जो पूरे विश्व का प्रधान शेयर बाजार माना जाता है। विश्व भर के लोगों के लिए मुक्त बाजार और वैश्वीकरण का प्रतीक माना जाता है। लेकिन क्या वास्तव में बाजार केवल वॉल स्ट्रीट जैसा हो सकता है? आखिर बाजार व्यवस्था के कुछ और नमूने भी होंगे? वे क्या हैं?

१. बाजार मानव समाज की बहुत प्राचीन व्यवस्था है। अफ्रीका में कलाहारी के बुशमैन व कुछ आदिवासी समुदायों को छोड़कर विश्व भर में विभिन्न प्रकार की सभ्यताओं में किसी न किसी स्तर पर बाजार व्यवस्था सदियों से मौजूद है।

२. प्राचीन काल में बाजार मुख्यतया मिलने-मिलाने की एक जगह, एक जरिया था जहां साथ-साथ वस्तुओं और कलाओं का आदान-प्रदान किया जाता था। कपड़ा, हथौड़ा, घोड़ा, कहानी-किस्से, धर्म व राजनीति यहां सभी मौजूद थे। एथेंस की आगरा में एक तरफ मांस मछली बिकती थी और दूसरी ओर सुकरात के संवाद जारी रहते थे। बाजारनुमा आदान-प्रदान करीब पांच हजार साल पुराना है। पहली फुटकर दुकानें करीब २५०० साल पहले बनीं।

इक्कीसवीं सदी की प्रमुख चुनौती यह है कि क्या बाजार को उस निहित स्वार्थ के सीमित व नकारात्मक दृष्टिकोण से बचाकर पुनर्जीवित किया जा सकता है? क्या 'बाजार' को 'मार्केट फंडामेंटलिज्म' से बचाया जा सकता है?

विज्ञापन में एक डॉक्टर का चित्र था और साथ में यह कथन था: 'डॉक्टर बनते समय जो शपथ ली थी उसमें मुनाफा कमाने का वायदा तो न था'। इस बात की ओर ध्यान कम आकर्षित होता है कि पूंजीवाद के भीतर भी इन समस्याओं पर चिंतन जारी है। इस संदर्भ में जॉर्ज सॉरॉस के विचारों व कार्यों से परिचय कर लेना अच्छा होगा। हालांकि वैश्वीकरण के विरोधी समूहों में सॉरॉस को अक्सर खलनायक की भूमिका में देखा जाता है। सॉरॉस हंगरी में पैदा हुए और पिछले करीब पचास साल से अमेरिका में बसे हुए हैं। वहां उन्होंने विश्व के पूंजी बाजार में सैकड़ों करोड़ डॉलर कमाए। पिछले २५ सालों में उन्होंने करोड़ों डॉलर ऐसे सामाजिक व राजनीतिक कार्यों में लगा दिये हैं जो सर्वसत्तावाद के विरोधी हैं। इस लक्ष्य से सॉरॉस ने कई देशों में ओपन सोसाइटी इंस्टीट्यूट का गठन किया। सॉरॉस अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश को चुनाव में हराने की कोशिश में भी जुटे रहे।

पिछले दस साल से सॉरॉस यह कह रहे हैं कि आज दुनिया को सर्वसत्तावाद से नहीं, बल्कि मार्केट फंडामेंटलिज्म से खतरा है। उन्होंने लिखा कि मार्केट फंडामेंटलिज्म उस मानसिकता को दर्शाती है जो करीब-करीब सभी सामाजिक कार्यों व मानव रिश्तों को समझौता व ठेकानुमा लेन-देन के रूप में देखती है। पश्चिम के देशों में अब अनेक प्रकार से समुदाय के रचनात्मक पहलुओं को खोजा जा रहा है। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद पश्चिम के देशों में आर्थिक विकास व बाजार का फैलाव कुछ इस प्रकार हुआ कि सामुदायिक व पारिवारिक रिश्ते कमजोर पड़ गये। अब दोनों की कमी महसूस करते हुए अनेक प्रकार की गतिविधियां उभर रही हैं।

इनमें से एक है सामुदायिक मुद्रा जिसे कम्यूनिटी करेंसी व स्थानीय करेंसी भी कहा जाता है। उत्तर व दक्षिण अमेरिका से लेकर यूरोप, एशिया और आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड तक हजारों कस्बों व शहरों के मुहल्लों में ऐसी मुद्रा पायी जाती है। अमेरिका की एक जानी-मानी सामुदायिक मुद्रा इथिका नाम के छोटे नगर में पिछले करीब १५ साल से चल रही है। इन सामुदायिक मुद्राओं का यह लक्ष्य कतई नहीं है कि उस राष्ट्र की मुद्रा को अपने क्षेत्र से निकाल दिया जाये। सामुदायिक मुद्रा राष्ट्रीय मुद्रा का विकल्प बनने की कोशिश नहीं करती, लेकिन उसकी अनुपूरक बनने का प्रयत्न जरूर करती है।

आमतौर पर निवेश केवल पैसे में वृद्धि के लिए किया जाता है। लेकिन अब कुछ निवेश अनेक प्रकार के सामाजिक न्याय व पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर कार्यरत होने का एक साधन

३. विश्व भर में यह माना गया कि बाजार सामाजिक मूल्यों और उन पर आधारित व्यवस्था का हिस्सा है। क्योंकि हर समाज में ब्याज से जुड़े कानून रहे, लोग ऋणग्रस्तता की समस्या से पीड़ित रहे। हमारे देश में फिर भी ब्याज की एक तय सीमा रही है। हालांकि इन मूल्यों का उल्लंघन हर सदी में हुआ है और इनके जरिये शोषण भी। पर इस शोषण को प्रगति का दर्जा नहीं दिया गया।

४. पूंजीवाद के बढ़ते-चढ़ते यह मान्यता भी बदली। जैसे ब्याज को अब पाप न मानकर उसे प्रगति व आर्थिक गतिशीलता के लिए एक जरूरी व वाजिब यंत्र मान लिया गया। यह संकेत था एक बहुत व्यापक व बुनियादी परिवर्तन का, जिससे मानवता की परिभाषा ही बदल गयी। अठारहवीं सदी के यूरोप में लालच व निजी स्वार्थ को न केवल अच्छाई का दर्जा दिया गया, बल्कि उसे मानव की बुनियादी विशेषता मान ली गयी जिसे धर्म व नैतिक मूल्यों ने जबरदस्ती दबाए रखा है। इसी विचारधारा के भीतर से आधुनिक अर्थशास्त्र का यह मूलभूत सिद्धांत पैदा हुआ कि 'अगर हर इंसान अपने निजी स्वार्थ के लिए काम करे तो उसमें सभी का सामूहिक स्वार्थ निहित रहता है।'

५. यह मनुष्य व समाज को देखने-समझने का बहुत ही सीमित व तंग नजरिया है। लेकिन यही नजरिया आज 'फ्री मार्केट' यानी मुक्त बाजार विचारधारा के नाम से दुनिया पर छाया हुआ है। पिछले करीब दस सालों से इस विचारधारा के कई पहलुओं को 'मार्केट फंडामेंटलिज्म' के नाम से भी जाना गया है। इसका विरोध केवल समाजवादी या गांधी विचार की दृष्टि से नहीं, बल्कि पूंजीवादी विचारधारा के भीतर से भी हो रहा है।

इक्कीसवीं सदी की प्रमुख चुनौती यह है कि क्या बाजार को उस निहित स्वार्थ के सीमित व नकारात्मक दृष्टिकोण से बचाकर पुनर्जीवित किया जा सकता है? क्या 'बाजार' को 'मार्केट फंडामेंटलिज्म' से बचाया जा सकता है? ब्रिटेन के एक अवकाश प्राप्त बिशप डेविड जेनकिब्स के मुताबिक आज बाजार पूरे विश्व की समस्या है। लोग मानने लगे हैं कि बाजार एक अच्छाई है जिसने खुदा का दर्जा प्राप्त कर लिया है- 'द मार्केट इज ए गुड दैट हैज बिकम ए गॉड'। इससे भयंकर समस्याएं पैदा हुई है। इसके दो पहलू हैः

१. जिसके हाथ में पैसा नहीं है वह बाजार के बीच खड़ा रहकर अदृश्य है- न तो वह दिखता है और न उसकी आवाज है। एक आकलन के अनुसार आज विश्व के करीब ५० प्रतिशत लोग बाजार में करीब-करीब गुमसुम खड़े हैं। उनके पास ज्यादा कुछ बेचने को नहीं है और जीवन की जरूरी वस्तुएं भी वे मुश्किल से खरीद पाते हैं।

२. बाजार की मानसिकता व सत्ता अब समाज व जीवन के ऐसे पहलुओं के भीतर घुसपैठ कर चुकी है जो पहले बाजार के बाहर थे। अमेरिका के एक वित्तीय पत्रकार राबर्ट कटनर ने इस पहलू पर पूरी किताब लिखी है जिसका नाम है 'एब्रीथिंग फॉर सेल'। इसके बन रहा है। इसे नैतिक निवेश व सामाजिक जिम्मेदारी निवेश दोनों के नाम से जाना जाता है। पिछले १५ साल से अमेरिका व यूरोप में इस प्रकार के निवेश में काफी बढ़ोतरी पायी गयी है। ऐसे निवेश का इतिहास एक स्तर पर काफी पुराना है। यूएसए में शुरू से ऐसे कुछ लोग रहे जिन्होंने शराब, तंबाकू व गोला-बारूद के व्यापार में निवेश करने से इंकार किया।

सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में एक अनोखी क्रांति हो रही है जो आज माइक्रोसॉफ्ट को परेशान कर रही है। इस क्रांति को फ्री सॉफ्टवेयर या ओपन सोर्स के नाम से जाना जाता है। आमतौर पर लोग इसे लिनक्स के नाम से पहचानते हैं जो सबसे जाना-माना ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर है। स्पष्ट है कि इन सभी प्रक्रियाओं-गतिविधियों के बल पर रातों-रात कोई न्यायपूर्ण परिवर्तन नहीं होने वाला। लेकिन इन अनुभवों को देखकर यह संकेत तो मिलता है कि शायद 'माइंडफुल मार्केट' यानी सचेत बाजार संभव है। सचेत बाजार की धारणा डेविड कोरटन ने अपनी किताब

एक आकलन के अनुसार आज विश्व के करीब ५० प्रतिशत लोग बाजार में करीब-करीब गुमसुम खड़े हैं। उनके पास ज्यादा कुछ बेचने को नहीं है और जीवन की जरूरी वस्तुएं भी वे मुश्किल से खरीद पाते हैं

'पूंजीवाद के बाद जीवन'- पोस्ट कारपोरेट वर्ल्डः लाइफ आफ्टर कैपिटलिज्म- में व्यक्त किया है। इन सभी प्रक्रियाओं में गांधीजी के न्यासिता के मूल्य की गूंज सुनायी देती है। उनके समय में इस मूल्य को सुंदर विचार पर अर्थनीति के हिसाब से अव्यावहारिक कहकर नकार दिया गया- कम से कम आमतौर पर ऐसा ही हुआ। लेकिन आज न्यासिता का मूल्य कई नये रूप ले रहा है। इस सत्य की अहमियत बढ़ रही है कि 'मुनाफा किसी भी व्यापार की जरूरत होती है; पर यह उसका लक्ष्य, उसका उद्देश्य नहीं हो सकता।'

यदि यह संभावना आपको खयाली पुलाव जैसी दिखे तो यह याद कीजिएगा कि १९०४ में उपनिवेशवाद के खिलाफ संघर्ष कितना कठिन- करीब-करीब असंभव ही लगता था। उस समय यह भी हास्यास्पद लगता था कि प्रेम और अहिंसा के बल पर राजनीतिक आंदोलन किया जा सकता है। गांधी व बापू कुटी की मूलतः यही प्रेरणा है कि हम इस 'असंभवता' के भ्रम में न फंसें।

(सामाजिक कार्यकर्ता और वरिष्ठ पत्रकार)